अमरीकी धुंध, मेड इन चाइना

वैश्वीकरण कई स्तरों पर होता है और इस संदर्भ में एक रोचक तथ्य प्रकाश में आया है। पिछले कुछ दशकों में अमेरिका ने कई सारी चीज़ों का उत्पादन चीन में आउटसोर्स किया है। अर्थात अपने उपयोग की चीज़ों को वह चीन में बनवाता है। इसका मुख्य कारण अमेरिका को प्रदूषण से बचाना था। मगर अब पता चला है कि वैश्विक स्तर पर बहती हवाएं चीन के कारखानों के प्रदूषण को बहाकर वापिस अमेरिका ले आई हैं।

पिछले कुछ दशकों में अमेरिका ने भारी मात्रा में अपने औद्योगिक उत्पादन को चीन स्थानांतरित किया था और इसके परिणामस्वरूप ही 'मेड इन चाइना' एक प्रचलित शब्द बना था। इस प्रक्रिया में यूएस में कारखाने बंद होते गए और चीन में उन्हीं चीज़ों के कारखाने खुलते गए। लगता तो था कि काफी चतुर कदम है मगर अब उल्टे बांस बरेली को लौट रहे हैं।

पेकिंग विश्वविद्यालय के जिंताई लिन और उनके साथियों ने आर्थिक व प्रदूषण उत्सर्जन के आंकड़ों के आधार पर चीन के प्रदूषण को कई समूहों में बांटा। इसके बाद उन्होंने यह गणना की कि चीन में इस्तेमाल होने वाली वस्तुओं के उत्पादन से कितना प्रदूषण होता है और उन वस्तुओं के उत्पादन से कितना प्रदूषण होता है जिन्हें यूएस को निर्यात कर दिया जाता है।

लिन व उनके साथियों ने कणीय प्रदूषण पर ध्यान केंद्रित किया - ये सल्फेट और कालिख जैसे वे कणीय पदार्थ होते हैं जो धुंआ-युक्त कोहरे में घुल-मिल जाते हैं और मानव स्वास्थ्य के लिए हानिकारक होते हैं। सल्फेट सांस सम्बंधी परेशानियां पैदा करता है और खास तौर से बच्चों व बुज़ुर्गों के लिए हानिकारक होता है।

टीम ने पाया कि चीन में वर्ष 2006 में लगभग 17-36 प्रतिशत धूम-कोहरा उन कारखानों से पैदा हुआ था जो निर्यात के लिए वस्तुओं का उत्पादन करते हैं। इनमें से 20 प्रतिशत वस्तुएं यूएस भेजी जाती हैं।

मामले में पेंच तब पैदा हुआ जब लिन की टीम ने प्रदूषण उत्सर्जन के आंकड़ों को वायुमंडलीय आंकड़ों के साथ जोड़कर देखा, जो यह बताते हैं कि हवाएं कणीय पदार्थों को कैसे यहां-वहां पहुंचाती हैं। पता चला कि ये हवाएं चीन में उत्पन्न धूम-कोहरे को प्रशांत महासागर से होते हुए पश्चिमी यूएस, खासकर सिएटल व कैलिफोर्निया, तक पहुंचा देती हैं।

लिन के विश्लेषण से पता चलता है कि यूएस में कुल सल्फेट प्रदूषण का 25 प्रतिशत हिस्सा तो चीन द्वारा यूएस के बाज़ार के लिए उत्पादित माल की वजह से आता है।

यह जानी-मानी बात है कि चीन के कारखानों से जितनी कार्बन डाईऑक्साइड निकलती है उसमें से अधिकांश उन वस्तुओं का उत्पादन करते हैं जो यूएस में खपती हैं। मगर लिन ने पहली बार धूम-कोहरे का विश्लेषण किया है।

लिन की टीम के एक सदस्य लीड्स विश्वविद्यालय के डैबो गुआन का मत है कि यूएस व अन्य सम्पन्न औद्योगिक देश विश्व औसत से ज़्यादा माल की खपत करते हैं। लिहाज़ा वे ही अधिकांश प्रदूषण के लिए ज़िम्मेदार हैं। ताज़ा अध्ययन दर्शाता है कि आउटसोर्सिंग करके वे इस समस्या से बच नहीं पाएंगे। ज़रूरत इस बात की है कि प्रदूषण कम करने के लिए जीवन शैली में समुचित परिवर्तन किए जाएं। ***(स्रोत फीचर्स)***